

**साँथरा** पुं. (तद्.) बिस्तर, चटाई, बिछौना उदा.  
नींद न माँगे साँथरा, भूख न माँगे स्वाद -कबीर।

**साँथरा** स्त्री. (तद्.) कुश आदि की चटाई।

**साँद/साँदा** पुं. (देश.) ठेंगुर, लंगर, ठेका टि. वह भारी लकड़ी जो पशुओं के गले में इसलिए बाँध दी जाती है कि वे भाग न पावें।

**साँध** पुं. (तद्.) 1. लक्ष्य, निशान 2. स्त्री. सीमा, हद, संधि।

**साँधना** स.क्रि. (तद्.) 1. निशाना लगाना, लक्ष्य करना, संधान करना उदा. करतल चाप रुचिर सर साँधा 2. संधि करना, मिलाकर एक करना, गूँथना।

**साँधा** पुं. (तद्.) दो रस्सियों आदि में दी हुई गाँठ।

**साँप** पुं. (तद्.) पेट के बल रेंगने वाला लंबा चित्तिदार जीव, जो बिलों, पेड़ों, पानी आदि में रहता है टि. साँप की हजारों प्रजातियाँ विश्व के प्रायः हर हिस्से में पाई जाती हैं, जिनमें से कुछ विषैली होती हैं, जिनके काटने से प्रायः प्राणांत हो जाता है, पर्यावरणविदों के अनुसार हर साँप विषधर नहीं होते। उनसे डरना और देखते ही मार डालना पारिस्थितिकी के वैविध्य और संतुलन के लिए ठीक नहीं है, शैव धर्मावलंबियों के लिए सर्प का विशिष्ट और पूज्य स्थान है, क्योंकि भगवान शंकर इसे अपने गले में धारण करते हैं, मिथकों में सर्प योनि का जिक्र भी मिलता है, हिंदुओं में नागपंचमी के दिन साँपों की एक जाति 'नाग' की पूजा की परंपरा है, गाँब-कस्बों में अक्सर सपेरे बीन बजाकर नाग-नागिन का खेल दिखाते हैं, यद्यपि अब कानूनन इसकी अनुमति नहीं है मुहा. कलेजे/छाती पर साँप लोटना- ईर्ष्याजनित घोर कष्ट होना, अत्यंत दुख होना; साँप सूँघ जाना-बेहोश, मृत व्यक्ति की तरह बेहरकत और चुप हो जाना, साँप के बिल में हाथ डालना- जान-बूझकर खतरे में पड़ना, साँप का पाँव देखना-असंभव बात के लिए प्रयत्न करना, साँप छछूंदर की दशा होना-दुविधा की स्थिति, ऐसी विकट स्थिति में पड़ना

कि दोनों ओर घोर संकट की संभावना हो; साँप नेवले का बैर- जन्मजात शत्रुता; साँप को दूध पिलाना- दुष्ट व्यक्ति या शत्रु की सहायता करना, शत्रु का पोषण करना।

**साँपड़ना** अ.क्रि. (देश.) 1. प्राप्त होना, मिलना 2. काम पूरा करके निवृत्त होना उदा. साँपड़ किया असनान सूरज सारी जप करे- मीरा।

**साँप-धरन** पुं. (तद्.) सर्प धारण करने वाले, शिव, महादेव।

**साँपिन** स्त्री. (तद्.) 1. सर्पिणी, साँप की मादा 2. साँप के आकार की एक प्रकार की भौरी या शारीरिक चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार शुभा-शुभ फल देने वाला माना जाता है 3. बहुत अधिक दुष्ट या विश्वासघातिनी स्त्री. उदा. रसना साँपिन बदन बिल जो न जपे हरि नाम-तुलसीदास 4. वह गाय जो बराबर जीभ निकाला करती हो।

**साँपिया** वि. (तद्.) साँप के रंग से मिलता हुआ रंग पुं. उक्त प्रकार का मटमैला काला रंग।

**साँभर** पुं. (देश.) 1. एक झील जिसके खारे पानी से नमक बनाया जाता है 2. उक्त प्रकार से तैयार किया गया नमक।

**साँभलना** स.क्रि. (तद्.) 1. स्मरण करना 2. सुनना उदा. साँभल्याँ रास गंगा फल होई- नरपति नाल्ह।

**साँमुहे** अव्य. (तद्.) सामने, सम्मुख।

**साँय-साँय** स्त्री. (अनु.) निर्जन स्थान में तेज हवा चलने की निरंतर होने वाली 'सन-सन' ध्वनि।

**साँवक** पुं. (तद्.) साँवा नामक कदन्न (देश.) वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं।

**साँवटा** वि. (तद्.) 1. समतल, बराबर 2. पूरी तरह से समाप्त किया हुआ, सफाचट।

**साँवत** पुं. (देश.) 1. एक राग 2. यौद्धा, सामंत।

**साँवती** स्त्री. (देश.) बैलगाड़ी आदि के नीचे की वह जाली जिसमें बैलों के लिए घास आदि रखते हैं।